तपस्या-जो राज्य दिलाये

संसार में असहायों पर अत्याचार, निर्धनता व रोगों में वृध्दि तथा पाप और भष्टाचार का बोल- बाला देखकर उसके मन में तीव्र तरंगें उतपन्न होने लगीं कि हम ईश्वरीय मत पर ऐसा राज्य स्थापित करें , जंहा कोई भी किसी को सताये नहीं, किसी के साथ अन्याय न हो, सुख -चैन की बंशी सदा बजे, किसी की भी अकालमृत्यु न हो, सबके भण्डारे धन-धान्य से भरे हों, प्रकृ.ति कोई भी उपद्रव न करे, रोग-शोक का नाम-निशान न हो, सभी निर्भीकितापूर्वक यत्र-तत्र -सर्वत्र विचरण करें और राजा सतय- स्वरूप में माता-पिता हो।

क्या कोई मनुष्य ऐसा साम्राज्य स्थापित कर सकता है? कदापि नहीं । मनुष्य देश को स्वतंत्र करा सकता है, कानून बना सकता है, उघोग लगा सकता है परन्तु ऐसा राज्य स्थापित नहीं कर सकता जिसमें सम्पूर्ण विश्व एक परिवार हो, मानव-मानव में परस्पर अपनापन हो और किसी-को -किसी से भय न हों। यह कार्य केवल ईश्वरीय शक्ति का ही है।

स्वयं ईश्वर राजयोग सिखाकर अपनी समस्त शक्तियां मनुष्यात्माओं को प्रदान कर देता है। वह उनमें पवित्रता का प्राण फूंक देता है। इनके बल से सम्पूर्ण प्रकृति व सम्पूर्ण मनुष्यात्माएं पावन बन जाती हैं। पापी और भ्रष्टाचारी रहते ही नहीं। दुरात्माएं वापिस चली जाती हैं, देवातमाएं सृष्टि पर उपस्थित हो जाती हैं, प्रकृति सेवारत हो जाती है। योगबल के कारण काया सम्पूर्ण निरोगी बन जाती है और इस विश्व को स्वर्ग की संज्ञा प्राप्त हो जाती हैं। अब स्वयं सर्वशक्तिवान भगवन पुन: इस धरा पर स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। इतना ही नहीं, स्वर्ग बनाकर 2500 वर्ष तक उसकी बागडोर जिनको देनी है, वे उन्हें भी तैयार कर रहे हैं। इसके लिए परमशिक्षक परमात्मा ने राजयोग की गहन तपस्या सिखाई है, जिसके द्वारा एक मनुष्य अपने स्तर को इतना ऊँचा उठा सकता है, वह स्वयं को इतना शक्तिशाली व महान बना सकता है कि स्वर्ग का राज्य उसके हाथ में दियाजा सके।

यह राजयोग आत्मा और परमात्मा का मिलन है अथवा यों कहें कि राजयोग द्वारा आत्मा, परमातमा पिता के साथ रहते-रहते उनकी सम्पूर्ण शक्तियां , पवित्रता और गुण स्वयं में धारण कर लेती है। इस तपस्या में तपस्वी पर ज्ञान सूर्य परमात्मा की किरणें निरन्तर पड़ती रहती हैं। तपस्वी की बुद्धि ज्ञान सूर्य पर एकटिक स्थिर हो जाती है, उसे यह संसार और यहां के मनुष्य दृष्टिगोचर ही नहीं होते । उसका दिव्य नेत्र निरन्तर उस एक को ही निहारता रहता है। इसी एकाग्रता और शिव परमात्मा से समीप सम्बन्ध होने के कारण वह योगी बन जाता है।

इस तरह ईश्वरीय शक्तियों को स्वयं में समाकर जब आत्मा मास्टर सर्वशक्तिवान बन जाती है तब सर्वशक्तिवान भगवान स्वर्ग की बागडोर उन्हे देकर अपने धाम वापस चला जाता है। परन्तु इन शक्तियों को वही स्वयं में समा सकता है जिसका अन्तर्चित् पूर्णतया स्वच्छ हो, जिसने पवित्रता के द्वारा स्वयं की बुध्दि को सुयोंग्य -पात्र बनाया हो।

राज्य -पद पाने के लिए सर्व शक्तियाँ, श्रेष्ठ चरित्र, सर्व गुण, पालना के संस्कार, देने की वृत्ति औश्र सबके प्रति अपनापन होना परमावश्यक है। इन सभी की प्राप्ति ज्ञान-चिन्तन से, सेवाओं में दुआएं प्राप्त करने से, मैं-पन व स्वार्थ-भाव के त्याग से, सर्व के प्रति आत्मिक भान जाग्रत करने से व योग -साधना से होती है। प्रस्तुत लेख में एक राजा के अन्दर क्या गुण होने चाहिए -इस विषय पर से सम्बन्धित व्याख्या हम करेंगे । स्मरण रहे, अकेले योग अभ्यास से सर्वस्व प्राप्त नहीं होगा।

सेवाओं द्वारा हमें सर्व को सुख भी देना है। सेवा के मैदान पर रहकर स्वयं को समझदार

यह राजयोग आत्मा और परमात्मा का मिलन है अथवा यों कहें कि राजयोग द्वारा आत्मा, परमातमा पिता के साथ रहते-रहते उनकी सम्पूर्ण शक्तियां , पवित्रता और गुण स्वयं में धारण कर लेती है। इस तपस्या में तपस्वी पर ज्ञान सूर्य परमात्मा की किरणें निरन्तर पड़ती रहती हैं। तपस्वी की बुद्धि ज्ञान सूर्य पर एकटिक स्थिर हो जाती है, उसे यह संसार और यहां के मनुष्य दृष्टिगोचर ही नहीं होते । उसका दिव्य नेत्र निरन्तर उस एक को ही निहारता रहता है। इसी एकाग्रता और शिव परमात्मा से समीप सम्बन्ध होने के कारण वह योगी बन जाता है।

व पालना करने वाला भी बनाना है, ज्ञान के गहन चिन्तन द्वारा अपने विवेक को भी दिव्य करना है और सबको सन्तुष्ट करने के संस्कार भी स्वंय मं भरने हैं। पवित्रता की गुह्रा व्याख्या हम सब ईश्वरीय महावाक्यों में सुन चुके हैं। इस बल से स्वयं को ऐसा चरित्रवान बनाना है ताकि किसी भी जन्म में चरित्रहीनता का आरोप हम पर न लगे । हमें स्वयं में राजाई गुण व राजाई संस्कार भरने हैं, तब हम राज्य -अधिकारी बनेंगे , मात्र प्रजा बना लेनेसे कोई राजा नहीं बनता। प्रजा तो किसी शक्तिशाली राजा द्वारा छीनी भी जा सकती है।

ईश्वरीय महावाक्य हैं-विश्व राज्य-अधिकारी बनने वालों को सहयोग हर आत्मा को किसी-न-किसी रूप में प्राप्त होगा, वे सर्व के सहयोगी होंगे । प्रकृति भी उन्हें अपना मालिक स्वीकार करेगी । राजा, दाता होता है, इसलिए उसे अन्नदाता भी कहते हैं। सफल राजा वे हुए जिन्होंने अपना सर्वस्व प्रजा को सुखी करने में लगा दिया ,भले ही इसके लिए उन्हें स्वयं भी कष्ट सहना पड़ा हो । परन्तु जो राजा प्रजाके धन को अपने भोग -विलास में गंवा देता है, अन्तत: उसे राजाई से हाथ धोना पड़ता है।

योग -तपस्या में हमने सीखा है कि प्राप्त धन को व साधनों केा दूसरों की सेवा में लगाओ। जो उसे अपने प्रति ही प्रयोग करते हैं, उनकी ईश्वरीय शक्तियां नष्ट हो जाती हैं , उनमें तयाग का सौन्दर्य नहीं रह पाता और धन व साधन भी सुखदाई नहीं रहते। राजा, प्रजा -पालक होता है। अपने इस कर्त्तव्य कसे भूलकर यदि कोई राजा भोग- विलास में मग्न हो जाए तो प्रजा उसे कभी प्यार नहीं करती और उसके अन्त का इन्तज़ार करती है। सच्ची शान वाले राजा अपनी नींद छोड़कर, वेश बदलकर, यह देखने के लिए कि कहीं कोइ दु:खी तो नहीं , चोरी तो नहीं होती सुरक्षाकर्मी सतकर्ता से काम कर रहें हैं, नगर में विचरण किया करते हैं। नगर में विचरण किया करते हैं। आज सब कुछ इसके विपरीत है।

राजयोग की तपस्या में हम स्वंय को पूर्वज की स्थिति में स्थित करकेे, मास्टर पालनहार बनकर शान्ति ,पवित्रता व शक्तियों के प्रकम्पन फैलाते हैं। इन सूक्ष्म तरंगों से इस समय मनुष्यात्माओं की पालना होती है और प्रकृति पावन बनती हे । जिसने अपने योग का स्वरूप दातापन का बना लिया है वह निरन्तर पालना कर रहे हैं और वही राज्य-अधिकारी बनेंगे।

राजा को प्रजा माता-पिता के रूप में निहारती है। राजा की दृष्टि में भी प्रजा के प्रति पितृभाव रहता है। इससे समस्त राज्य में परिवार की भावना बनी रहती है। राजा पुत्रवत् ही प्रजा का ध्यान रखता है, न्याय करता है और सबकी बातें सुनता है। तपस्वी भी स्वयं को परमात्मा पिता समान स्थिति में स्थित कर लेता हैं। वह अकेला और सूखा संन्यासी बनकर नहीं रहता वरन् दूसरों को मात-पिता की महसूसता कराता है। उसकी शुभकामना भी यही रहती है कि सभी सुखी हो और निर्भय हों , सबको न्याय मिले।

सच्चा योगी सभी की बातें सुनकर उनका हल प्रदान करता है। जो स्वर्ग के राज्य-

भोपाल। गोडस विज़डम फॉर इनर पीस एण्ड ग्लोबल हारमनी , कार्यक्रम के पश्चात समूहचित्र में प्रो.कमल दीक्षित, ब्र.कु. रीना ,पवित्र श्रीवास्तव, डॉ. पुशपेन्द्र पाण्डे, मधुकर द्विवेदी तथा अन्य।

भैरवाह-नेपाल। स्नहमिलन के कार्यक्रम का उद्घाटन करतें हुए ब्र.कु. सुरेन्द्र, ब्र.कु.शांति, व्यापार मंडल के अध्यक्ष विष्णु शर्मा तथा समाजसेवी दिलीप भट्टराई, ब्र.कु. दिपेन्द्र व ब्र.कु.भूपेन्द्र।

कटक। बहरें और गुंगे के लिए आध्यात्मिक ज्ञान की डीवीडी रिलीस करते हुए ब्र.कु.जयंति,लन्दन,कमिश्नर,एच.के.त्रिपाठी,अरूण प्रसाद,ब्र.कु.कमलेश तथा अन्य।

दिल्ली-आर.के.पुरम। गीता के भगवान का अवतरण कार्यक्रम का दीप प्रज्जवलन कर उद्घाटन करते हुए दिल्ली काग्रेस के अध्यक्ष सांसद जयप्रकाश अग्रवाल ,ब्र.कु.अमीरचंद, ब्र.कु. उर्मिला ब्र.कु. अनिता, ।

गुलबर्गा। डेप्यु.कमिश्नर लता कुमारी, आईएएस को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. विजया साथ में ब्र.कु.प्रेमसिंह ।

करवेनगर - पुने। नगरसेविका सुरेखा मकवानजी का सवागत करते हुए ब्र.कु.नीरूबहन।